

ना आ ग विरुति श्रम नादना रूय एक थयग्राये हि पुन ना ना सि
 म मून ॥ १४ ॥ श्री गवान् उ च ॥ हत ग क थयि श्री मि दि शा श्री म
 विरुपाय शव क्षाना ४ कुन (७) वू ना सा ना विरु सा म ॥ १५ ॥ श्र
 ह मान्म गु ज क स सु व रू ना ना मय सि ग ४ अरु मा दि श्र म धं व
 श्र ना ना म ग य व व ॥ १६ ॥ श्र दि या ना मं ह वि वू श्री मि वारं वि
 र्जं ४ मा ना म रि वि मी र्ता मि न दू ना ना म ह ४ श्री ॥ १७ ॥
 दं वा ना राम द्वा मि द वा म सि वा स व ४ यि दि शा ना न न ध्र मि र

आम...

2576

तामसिधता ना॥२२॥ त्रुडानागं कत्र ग्यासि विरु सांज कत्र कर्ण
विस्नुना नायावक ग्यासि भत्र सिख निनाम हं॥२३॥ यत्रो ध सा ग्य
मुखामो विद्वि यार्थ वृहस्य गि। स नानी नाम हं रुद ४। सत्र मासि
सा गत्र ४॥२४॥ महषी नारु उत्र हं गि त्राम स्र क म क रं। क
रुना क र्यं क रू। सि स्याव त्राना हि मा लय ४॥२५॥ त्रस न्य
४ सर्व वृ का नां ग्य नात्र द ४। गं ध वी ना त्रि थ ४ सिद्धा ना क
वि त्राम नि ४॥२६॥ उद्य ४ मं ग्र व सम ग्या नां सिद्धि मा म म मा

रु। त्राम ग गडं दुनां त्रानां वन त्रा धियं॥२७॥ अयू ध
नाम वज्र (धनू नासि काम धू का यत्र न ग्या क दय ४ सय्या नाम
सि वासू कि ४॥२८॥ अने न ग्या सि ना गनी। कत्र नाद साम हं यि
गृ नां म क मा वा रु म ४ सय म ना म हं॥२९॥ यद्वा द ग्या सि द
ए। ना का ल क ल य ना म हं। म ग ना व म (ग दा हं वे न क य ग्य य
दि नां॥३०॥ य व न ४ य व ना सि त्राम ४ ग रु रु ना म हं। दु वा नां
म क ल ग्या सि मु। ग सा म सि ग्रा ड वि॥३१॥ म र्ग ना मा दि र्ग ग्य

मध्यवेदमहान। अथ तमविद्याविद्यानां वादयवदणमहं
॥३२॥ अक्षत्रानामकात्रासिद्धं ४ सामसिकस्य च। अथ वा कयक
लाक्षागाहं विनागासुख ४॥३३॥ मृग्य ४ सर्वदने ४ अहमृदुवश्य
विद्यानां। कीर्ति ४ श्रेयस्क्रान्तीनां। स्मृति मीमांसा। धृति ४ क्षमा ॥३४॥
वह सामगाथा सा मां गायति रुन्द सामदं। मासानां माग्जं श्री
वह मृगुनानु सुमाकन ४॥३५॥ उषधीनां यवसि। धातुना
मसिकश्च ना। सर्वे वापनतीनां दशार्हवान् नन्दन ॥३६॥ धू

नृकलजगामसि। तत्रात्र तन्मिनामह। अथामिद्यवसायासि। स
र्वसत्त्वमैतमहं ॥३७॥ वृषुनां वासुदेवासि। पान्दवानां धिने
अय। मनीनामप्यहव्यास ४ कविना सुसनाकवि ४॥३८॥ दं उद
मयगा मसि। निगिरसि। जिगीवनी। मोनश्चैवसि। मुद्राणी
क्षानं क्षीनवणामह ॥३९॥ यथापि सर्वरूपा ना। वीजगदहम
इन। नरुदसि। विनायस्या नमय रूपां वराचरं ॥४०॥ नागासि
ममदिव्यानां। विरूतिनायनरूपं। यथारूढमगश्याका। वि

न विस्मय मया ॥ ४१ ॥ जज्ञाद्वरुणिमन्तुर्वं, धीमद्वृद्धिर्गमवच ॥ १
 तदवावचकृत्, मम गीता सरुव ॥ ४२ ॥ अथवाचकृत् न गीत ।
 स्थानगयाशन । विष्णुर्हृदिदकृत्, भक्तो भक्तस्त्रिणा जगत्
 ॥ ४३ ॥ ॐ गीता गवर्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
 गीतामहोष्ठीकृत् श्रीकृष्णार्जुनसंवादे लिख्यते ॥ १ ॥ गीता
 मदभाषाया ॥ ४४ ॥ ॐ नमो गीताय ॥ केलाभ गीतवत्
 रं मन्नानाधु विविधिक । नानादुमलादी (धु) नानापूषाय रि

॥१॥ सहकालधुवाकी (धूचकवाकी य (अरि न। गन्धदित्यसंका
 ॥२॥ शुद्धमूठिकसाया (धरुडयधे गिलावले
 मन्दित्रसुसुखमीनवृद्धायुद्धमि संकनम् ॥३॥ अरि वाद्युद्धधनाप्य (गिर्व
 यत्रमकात्रधी। सु गकसिमिफु न (धेवकेनवा ध्याय न रगन् ॥४॥ ॐ
 स्वउवाच ॥ सर्वरूपात्मका प्रदग्निवात्मकः ॥ उमात्रुदात्मकः सर्व
 लोकसर्वत्राचरन् ॥५॥ वमाउवाच ॥ कृणु मूना निष्ठु ध्यानिदव
 दवगुरुले। प्रबमसं गयाद बुहितेत्वन संकन ॥६॥ ॐ स्वत्र

उवाच॥ वाग्रा... मसादव यया (७) पुमह ध्वनं न मिषदव शं गया
यां युपि तामहं ॥ १॥ कत्रुदं विदुः सधैर्युगा (८) मगिषधी। पृक्
प्रवत्वा का न्धं विग्वच विमल स्वप्न ॥ ६॥ अट्ट हास महानान्दम
हिद पुमहावर्गं। उड् न्यां पुमं हां कालं मयुड् (९) म हा कट् म
हा लिङ्गं मूलं स्वप्न ॥ ७॥ शंख (१०) म हा ग र्ग (११) क (१२) पुमहाय
उ। त्रुड काद्यां महा का ग महा लिङ्गं मूलं स्वप्न ॥ १०॥ क दा प्रय
व सी गमनं त्रुडं त्रुड महा लय सुवधु र्वे म हा सा र्ग (१३) व र्ग रुव

वरुध्वं ॥ ११॥ रुत्रव रुत्रवा कां प्र रुव वसु य न विदुः ॥ उ गं क
नखले व र्ग रुड क ध्वं कृद गिर्व ॥ १२॥ दव दात्र व न दं धी त्रुधु
शं मत्रुदं ग ल। पुड् त्रुगं पि द ध्याया क्का ग ल रु क य दि नं ॥ १३॥
प्र कां च प्र क र्ति वा सं गृह्णं वा मा ग क स्व ल। कालिं कृ ल नी क
क ध्वं (१४) क ध्वं म धु ल स्वप्न ॥ १४॥ ध्म न सिद्ध स्वप्न या गं म
य ग्यां धा रु स्वप्न ॥ विरु य वेव क सी प्र रु य म धु क स्वप्न ॥ १५॥
ह त्रि स्व (१६) ह त्रं व यु त्रि स्य प्र व क स्वप्न। रुटं वा म स्वप्न विद्या

कुरुवे कुरुवे ॥ १५ ॥ किनागु किनाक ।
यमक वपि संध्यायां वीर्यायां वपि लोचन ॥ १६ ॥ दानवानावध
थयवात्राद विधायवर्त । किनागु कुरुका नर्क । (१७) काटी श्व
नाथा ॥ १८ ॥ सफ (मदावत्र शीम स्वयं रु ४ कनक श्वत्र । कर्षि का
त्र गधधार्द केला सुगु गधधियं ॥ १९ ॥ ह म कुरु विरूपाक्ष सु
गुर्वगं धमार्दन ॥ यमर्लि (ग विरू ४ काली कयाली कनवीत्र
क ॥ २० ॥ दी के माह श्वत्र रू य न पा ले गु य गु यति । श्रीकात्र

हि विक् लि १० द वि का यां उ मा य ॥ २१ ॥ ग गी द्वात्र लर्मत्र व ६
काले क मत्र क ६ के । अ ले श्वत्रे पि १० ली व धी (ग ले पि यत्रा न के ।
॥ २२ ॥ ग गी द्वात्र मै हि म सुान मन ल व उ वा सु ख लि (ग १० श्व
न वत्र द का या म छि के श्वत्र ॥ २३ ॥ श का (ग गात्र कालिं ग या मा
ले हाठ के श्वत्र । श्रु व वि सु ना मा नि द व द व १० धी मा गा ॥
॥ २४ ॥ पुत्रा (व यां य ग गा नि व १० य त्रि य वृ क्ति । ०० द गु यं ३
रु ली य १० ० वि व स नि (धो ॥ २५ ॥ द १० श्व म ध य सु नी रु

लंवाधामानवशसम्पत्सत्रकृतंयायं.श्रुयमानविनश्यति॥२॥
कल्यकाटिसहस्राविकल्यकाटिगणनिवाकाशूननविमान
नत्रउलाकमहीयत॥३॥उडउडमि.मि॥४॥यूयूद्विज्ञाकूम॥वि
रुनाद्वदवदवजसर्वयाये॥५॥मृच॥२॥॥०॥ययुयविलि
गमागुंमार्क॥॥॥॥॥३॥नमानात्रायधाय॥अविनयमयनय
विष्ठादमयमनन॥४॥मयविषयत्रमहर्षी।रुतदयाविष्ठात्रय
त्रयर्मसालगत्र॥१॥॥॥दिवाधुनिमकत्रनयत्रिमलपति

शागसञ्चिदानन्दे।शीयमियदात्रविंदरुवरुययदद्विदवन्दे॥
॥॥॥सत्ययत्रिरुदायगमनाथगुवाहंनमामकीनस्त्र।सम्पदा
दिगर्तग॥४॥कतिनसूदानगर्तग॥२॥॥३॥उद्गानगनरिदनर्गद
नूर्गदत्रामिष्टमिष्टग।जिदधूदधू।रुवमियरुवगारुमिनकि
रुवत्रस्त्रात्र॥४॥मत्स्याविरिजवगात्रवगात्रवगावगावसूक्ष्मय
त्रम॥५॥त्रियालीरुवगा रुवगावशिगाहं।दामादत्रमुष्टमदि
त्रसन्दत्रवनाविन्द(गमविन्द॥५॥॥॥रुवकलक्षिमथनमन्दम

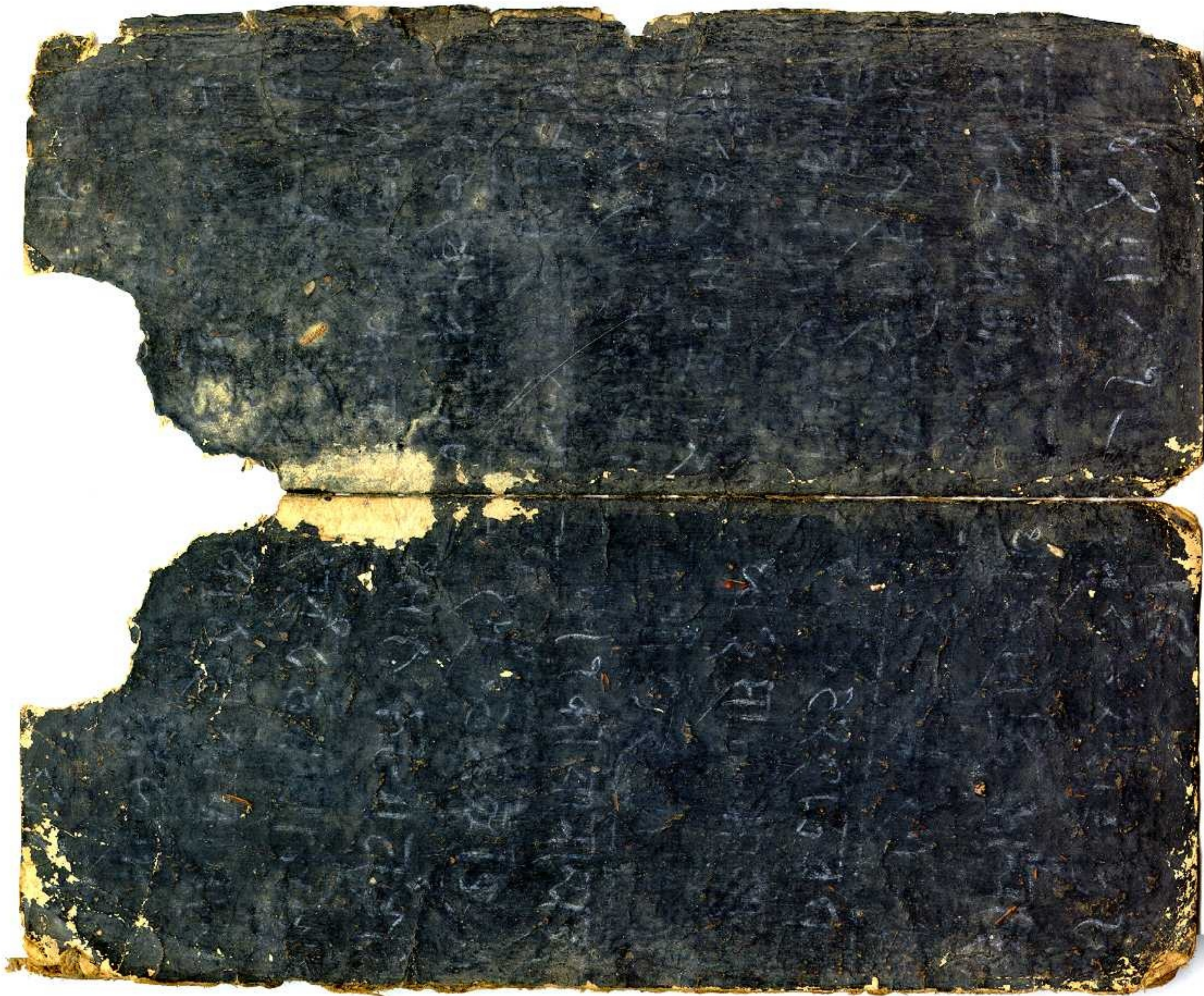
[illegible][illegible]

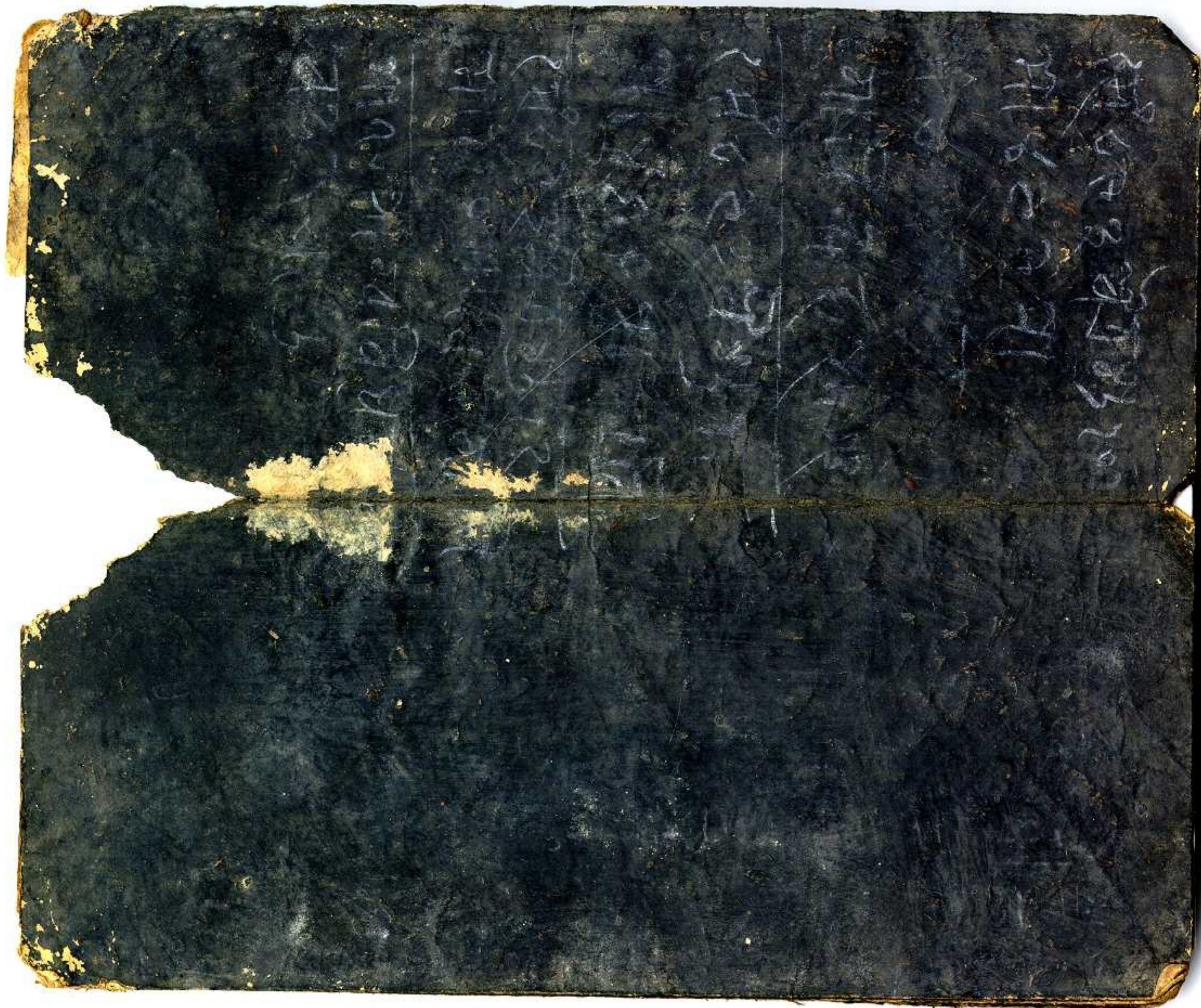
2576

SEVENTH EDITION

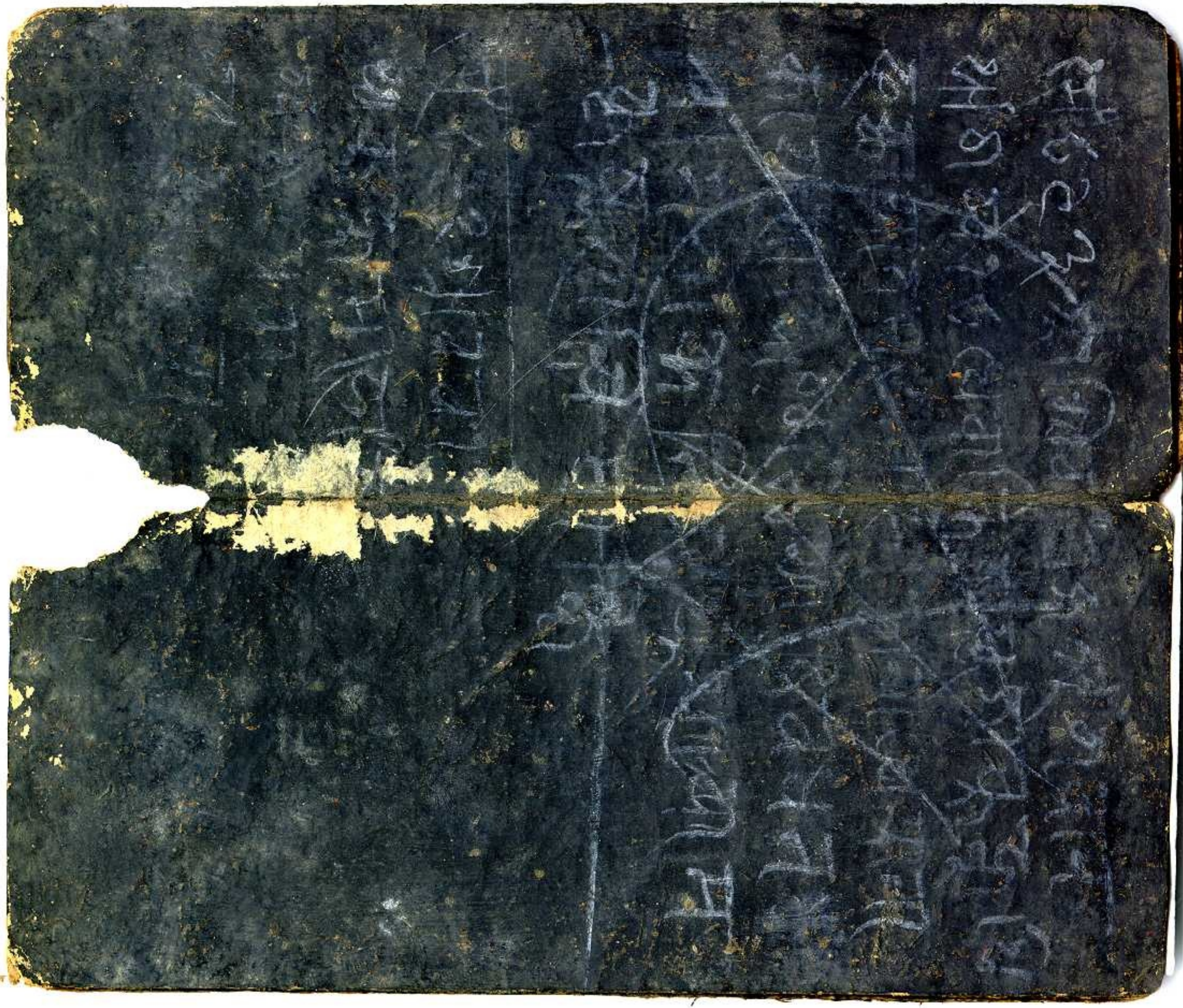
THE NEW YORK PUBLIC LIBRARY

Handwritten text in a cursive script, likely a musical score or a list of names, written on aged, stained paper. The text is organized into several lines, with some lines starting with a double bar line (||). The script is dense and difficult to decipher, but appears to be a form of shorthand or a specific dialect of a historical language.









ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

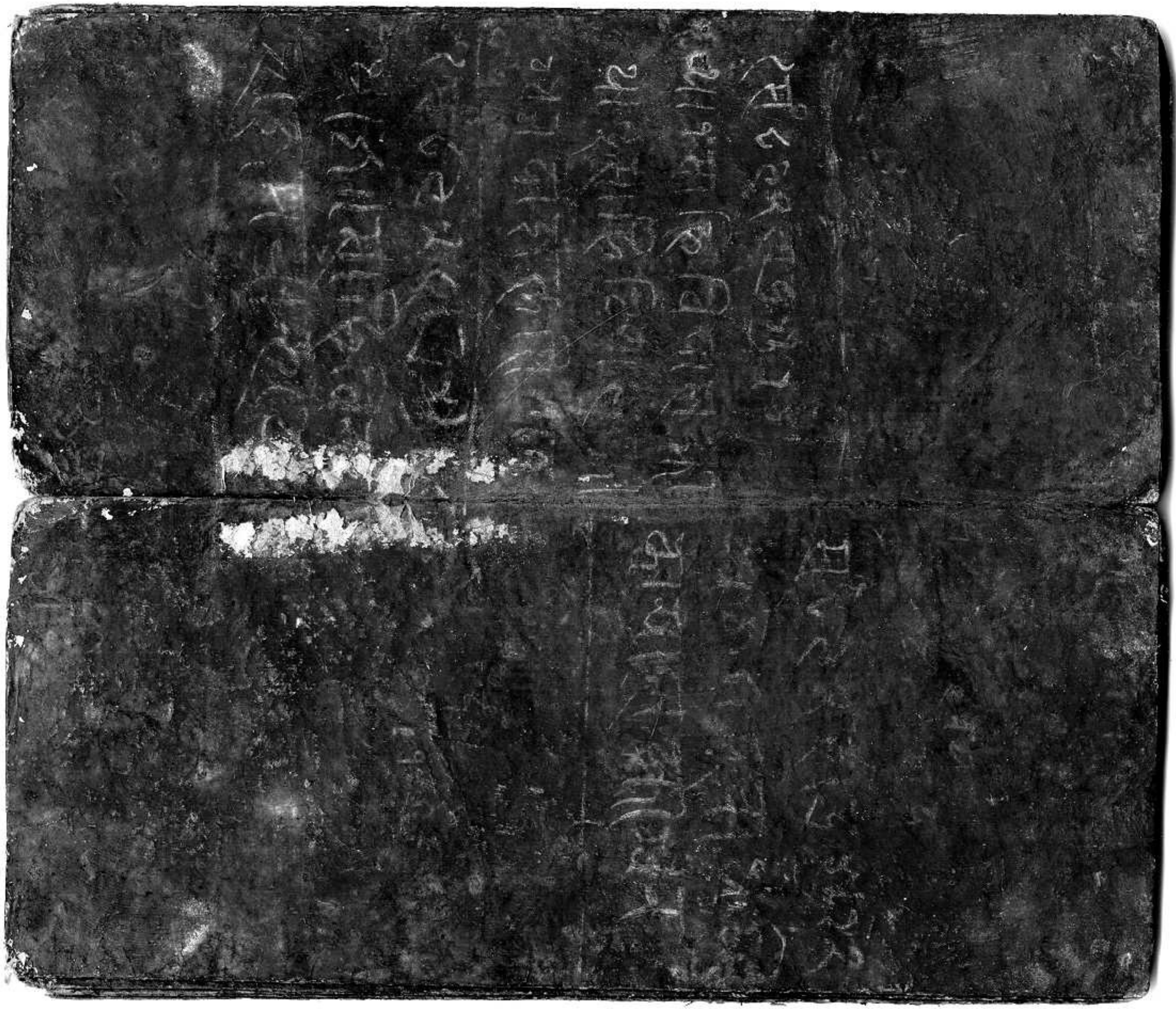
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

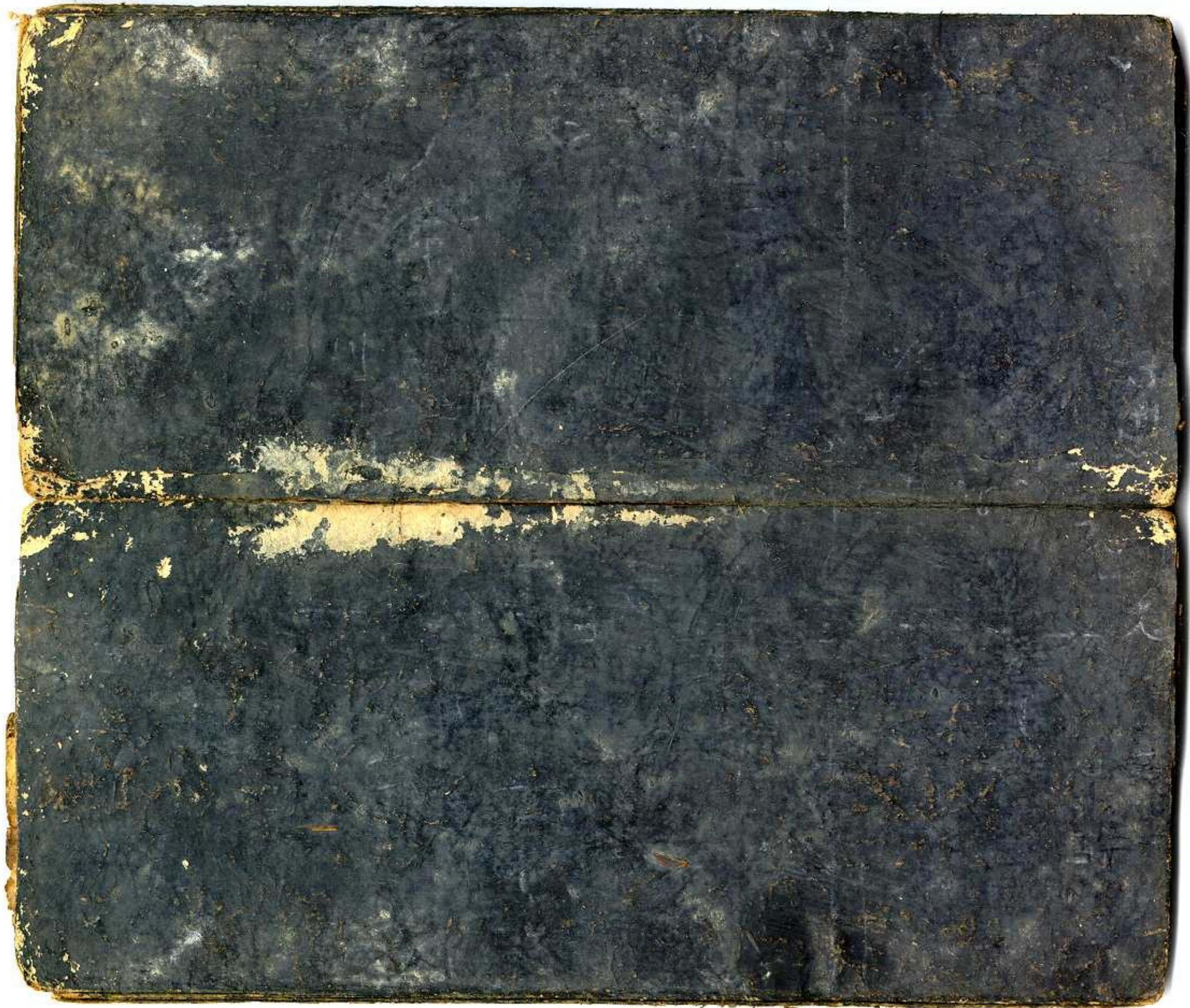
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

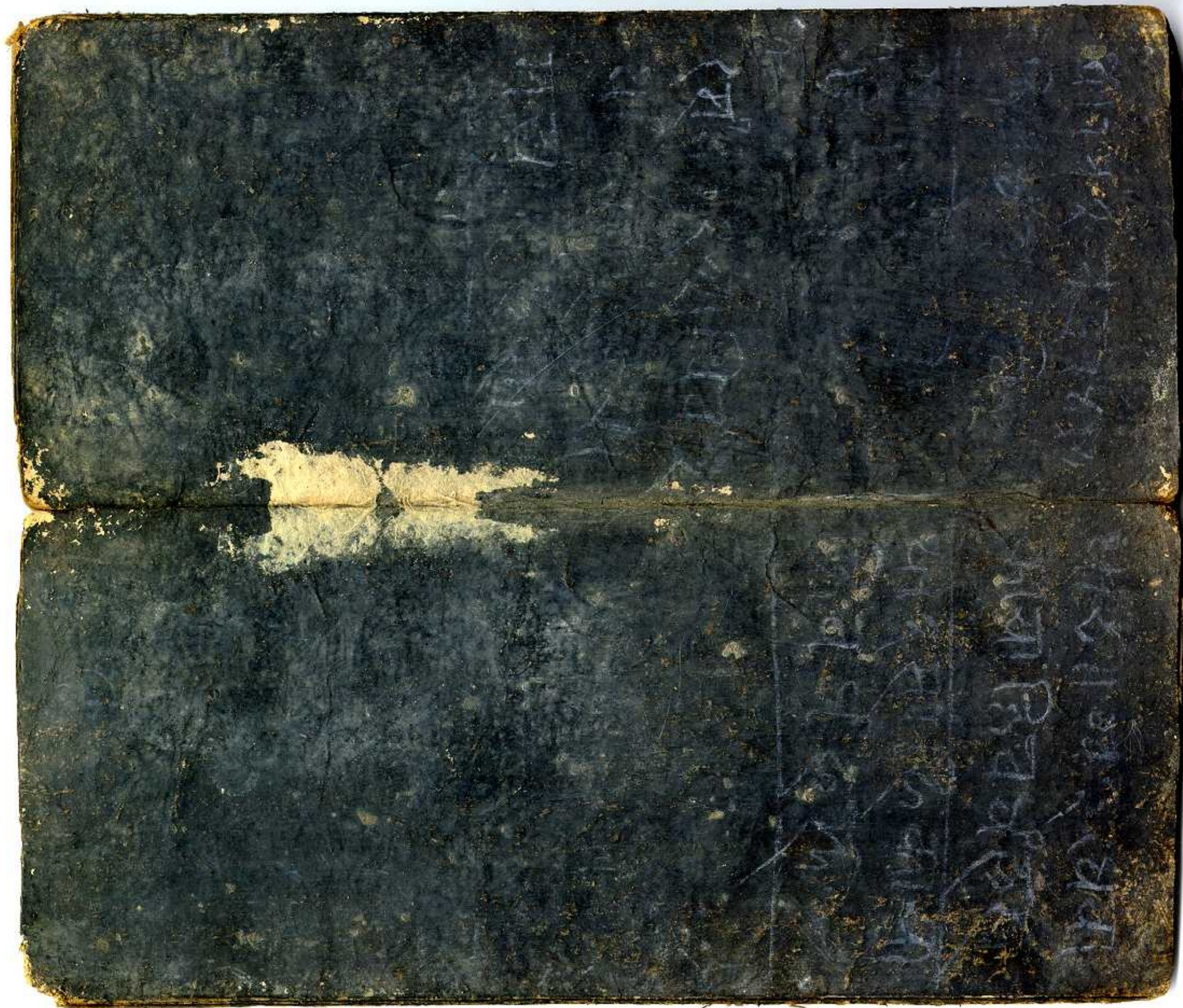
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

Handwritten text in Devanagari script, likely a religious or philosophical manuscript. The text is written in a cursive style on a dark, aged surface. The script is arranged in approximately 10 horizontal lines across the upper half of the page.

Handwritten text in Devanagari script, continuing from the upper half. The text is written in a cursive style on a dark, aged surface. The script is arranged in approximately 10 horizontal lines across the lower half of the page. There is a significant horizontal tear or damage across the middle of the page, separating the two sections of text.

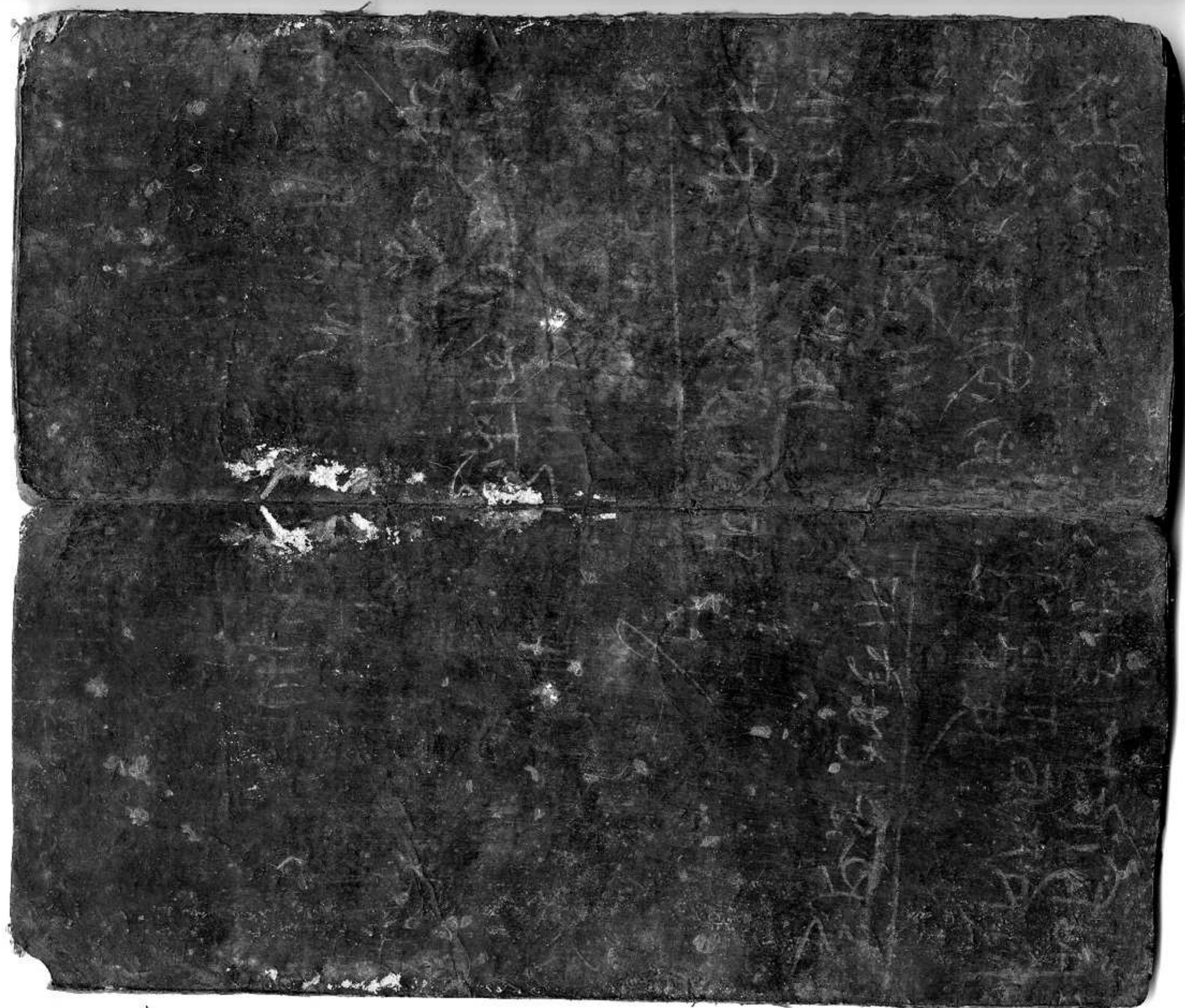






ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय